॥ रामाष्टकम् ३ ॥

.. rAmAShTakam 3 ..

sanskritdocuments.org

July 25, 2016

Document Information

Text title : raamaashhTaka 3 bhaje visheShasundaraM
File name : raamaashhTaka3.itx
Category : aShTaka
Location : doc_raama
Author : Shri Vyasa
Language : Sanskrit
Subject : philosophy/hinduism/religion
Proofread by : Madhavi U mupadrasta at gmail.com
Latest update : December 28, 2012
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com
Site access : http://sanskritdocuments.org

॥ रामाष्टकम् ३ ॥

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम् ।
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥ १॥

जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम् ।
स्वभक्तभीतिभङ्गनं भजे ह राममद्वयम् ॥ २॥

निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम् ।
समं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ ३॥

सहप्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम् ।
निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम् ॥ ४॥

निष्प्रपञ्चनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम्॥

चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम् ॥ ५॥

भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम् ।
गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम् ॥ ६॥

महावाक्यबोधकैर्विराजमनवाक्पदैः ।
परब्रह्म व्यापकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ७॥

शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम् ।
विराजमानदैशिकं भजे ह राममद्वयम् ॥ ८॥

रामाष्टकं पठति यः सुकरं सुपुण्यं
  व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
  सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ ९॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं रामाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

<ःॢ>

Proofread by Madhavi U mupadrasta at gmail.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

.. rAmAShTakam 3 ..
was typeset on July 25, 2016

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*